Title: Need to set up a separate `Purvanchal' State out of U.P.-Laid.

श्री हरि केवल प्रसाद (सलेमपुर): पूर्वी उ.प्र. के २२ जिलों को मिलाकर एक अलग

पूर्वांचल राज्य' के गठन का उल्लेख राष्ट्रीय एजेंडे में नहीं होने से वहां करोड़ों जनता में निराशा एवं असंतोष है। आजादी के ५० वर्षों बाद भी गलत नियोजन के चलते इस क्षेत्र की ५ करोड़ ३० लाख जनता गरीबी, भुखमरी, बीमारी, अभाव, अशिक्षा व बेरोजगारी की त्रासदी झेल रही है। ८५ हजार ८४४ वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल तथा २७ संसदीय सीटों वाले इन क्षेत्रों का आजादी की लड़ाई में शानदार इतिहास रहा है। भगवान शिव, राम, बुद्ध व महावीर की इस धरती ने समूचे विश व को एक नई रोशनी व पौराणिक, धार्मिक व सांस्कृतिक विरासत दी है। सूफी संतों व प्रख्यात साहित्यकारों की इस जन्म व कर्मभूमि से एक नया संदेश व दिशा मिली है। गंगा, यमुना, सरयू, राप्ती, घाघरा, कुआनो तथा बड़ी गंडक नदियों के होते हुए भी यहां की ५० प्रतिशत भूमि असिंचित है। इस क्षेत्र के केवल १२ लाख ८ हजार लोग रोजगार प्राप्त हैं और कुल आबादी के ३१ प्रतिशत युवक नौकरी के लिए बाहर भागे हुए हैं। भूमि का उर्वरता और प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर होने के बावजूद इसमें प्रति व्यक्ति सालाना आमदनी तीन हजार रुपये से कम है। यहां साक्षरता केवल ३८ प्रतिशत है जिसमें महिला साक्षरता का प्रतिशत मात्र २० है। हरियाणा, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, गोवा, पांडिचेरी जैसे छोटे राज्यों के चहुमुखी विकास से स्पष्ट है कि बड़े राज्यों की अपेक्षा छोटे राज्यों का त्वरित विकास होता है। अभावग्रस्त पूर्वांचल की जनता में व्यापक असंतोष है जो कभी भी विस्फोटक रूप धारण कर सकता है।

अचः केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि पूर्वी उ.प्र. के लोगों की तकदीर संवारने के लिए अलग पूर्वांचल राज्य जनहित में बनाये जाने की कृपा प्रदान करें।